Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) e- ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.03.02.04 Open Access

'त्रिशूल' उपन्यास में साम्प्रदायिकता का नया स्वरूप

अमित कुमार
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

प्रसिद्ध कथाकार शिवमूर्ति द्वारा लिखा गया उपन्यास ६ दिसम्बर १९९२ में अयोध्या में हुए बाबरी मस्जिद विध्वंस तथा इससे देश में होने वाली साम्प्रदायिकता पर लिखा गया है। जिसमें यह दिखाने का प्रयास किया गया है। यह साम्प्रदायिकता सिर्फ हिन्दू-मुस्लिमों के साथ-साथ सवर्ण वर्ग तथा निम्न वर्ग के बीच भी हुयी थी। उपन्यास में लेखक ने शास्त्री जी के माध्यम से सवर्णों की मानसिकता का सजीव वर्णन किया है। लेखक के यहाँ गाय देखकर शास्त्री जी कहते हैं कि ''गाय पालकर आप सब हिन्दू का धर्म निबाह रहे हैं। गो-ब्राह्मण की सेवा! आपको देखकर लगता है कि आप आस्थावान व्यक्ति हैं और जीवन का मूल है- आस्था।''१ उपन्यासकार शास्त्री जी से वार्ता करते हुए आस्तिक या नास्तिक के ईश्वर सम्बन्धी प्रश्न पर कहता है कि ''मेरी कल्पना का ईश्वर केवल बिन्दुओं का ईश्वर नहीं है। वह सभी धर्मावलम्बियों का है। विभिन्न धार्मिक ब्राण्ड के ईश्वर स्वयंभू नहीं। उन्हें हमने अपनी जरूरत, अपने स्वार्थ के अनुसार गढ़ा है।.....अन्य धर्मों ने ईश्वर की कल्पना अपने समाज को नियंत्रित करने, उसकी बेहतरी के लिए की जबकि हमने इसका उपयोग किया अपने ही भाइयों का शोषण करने और हराम की कमाई खाने के लिए। यही नहीं, हमने शोषण से अपने भगवान तक को नहीं बक्सा।''२

उपन्यास में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष को लेखक ने बहुत ही मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है तथा शास्त्री जैसे लोगों के हिन्दू मन को टटोला है जिनके मन में मुस्लिमों के लिए सिर्फ नफरत ही नफरत भरी हुई है कहीं भी प्रेम का भाव नहीं है ''जब धरम के नाम पर इन मुसलमानों ने देश की छाती चीरकर दो टुकड़े कर दिये तो फिर यहां क्या करने के लिए रह गए? अपनी ऐसी-तैसी कराने.....?''३ वैसे यदि देखा जाए तो यह भारत-पाक विभाजन आम भारतीय हिन्दू या मुसलमान की सोच नहीं थी आम जनता इसका परिणाम भी नहीं जानती थी यह तो पकड़कर हिलाता है और दूसरा दो हाथ लम्बा

Received: 18.08.2020 Accepted: 05.09.2020 Published: 06.09.2020

त्रिशूल उनके गले पर अड़ाकर पान से लाल मुंह टेढ़ा करके कहता है, 'बोल साले' जै सिरी राम! भीड़ जुड़ने लगती है।

''बोलता है कि त्रिशूल तेरी.....''

भय से महमूद की आँखे चित्ती कौड़ियों की तरह फैल जाती हैं।

''पैंट खोल

साले की।''

''बोल, राम हमारे बाप हैं।''

''अल्ला अकबर पाप है।''

''नहीं बोलेगा, तेरी मां की .....

धम्-धम्-धम्! लात मुक्के बरसने लगते हैं। वह नीचे गिर जाता है।''४

उपन्यासकार ने मुस्लिमों पर होने वाली इन ज्यादातियों का उपन्यास में बड़ी ही शिद्द के साथ उठाया है जिसमें यह भी दिखाया है कि बाबरी विध्वंश के पश्चात हिन्दुओं द्वारा मुस्लिम समाज पर किस प्रकार हमले किये। उन्हें इतना भयभीत कर दिया कि वे अपना घर बार छोड़कर भागे। महमूद के अब्बा का जो पत्र लेखक को मिलता है उसमें लिखा गया है कि ''दंगे में इक्का और घर जला दिया गया। घोड़ी वे लोग जबरन हांक ले गए। पचीसों घर हिन्दुओं के बीच दो घर मुसलमान। जान का खतरा पैदा हो गया था। हम लोग लखनऊ भाग आए हैं। अभी कोइ पक्का ठीहा नहीं मिला।''५ ऐसे दंगों में भारतीय प्रशासन तथा मीडिया भी हिन्दू- मुस्लिम संघर्ष को बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभाते हैं और शास्त्री जैसे लोग राजनैतिक फायदे के लिए कई प्रकार के हथकण्डों का इस्तेमाल करते हैं। उपन्यास में शास्त्री जी महमूद को मुहल्ले से निकालने के लिए स्वयं अपने पोते का अपहरण कराकर महमूद को फंसाते हैं जहां प्रशासनिक अधिकारी जाति के नाम पर उसे अधमरा करके छोड़ते हैं। उपन्यास में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष के साथ-साथ सवर्ण हिन्दू बनाम निम्न वर्ग के संघर्ष को भी दिखाया गया है जहां निम्न जातियों को उपदेशित करने वाले पाले की हत्या की जाती है जो मंदिर-मस्जिद नहीं बल्कि इंसानियत चाहता है।

Received: 18.08.2020 Accepted: 05.09.2020 Published: 06.09.2020

उपन्यासकार की सोंच में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष नहीं है बल्कि वे दोनों धर्म के लोगों में एकता देखना चाहते हैं तो अयोध्या विवाद को लेकर वे निष्पक्ष रूप से कहते हैं कि ''मेरा वश चले तो मैं मन्दिर-मस्जिद दोनों को जमींदोज कराकर वहां बच्चों के खेलने के लिए पार्क बनवा दूँगा।''६ किन्तु लेखक की मानसिकता वाले लोग हिन्दू या मुसलमान बहुत कम ही हैं। बल्कि उनकी संख्या ज्यादा है जो धर्म के नाम पर एक दूसरे पर अत्याचार करना जानते हैं। लेखक के घर में एक मुसलकान लड़का महमूद रहता है जो उनका नौकर और बेटा दोनों हैं वह उनके साथ-साथ आस-पड़ोस के अन्य लोगों के घरों के जरूरी काम भी कर देता है शास्त्री भी जब तक उसके मुस्लिम होने का पता नहीं चलता तब तक उससे प्रेम करते हैं और अपने बहुत से काम उससे करवाते हैं किन्तु जिस दिन उन्हें पता चलता है कि उनके मोहल्ले में रहने वाला यह लड़का मुसलमान है तो वे सीधे प्रश्न करते हैं कि ''सुना है आपके घर काम करने वाला लड़क मुसलमान है? .....क्यों? आपको कोई हिन्दू नहीं मिला?''७

शास्त्री जी जैसे लोगों को देश के मुसलमानों की देश की भक्ति पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं है ऐसे लोग ही हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदयिकता को जन्म देते हैं और उसका राजनीतिक फायदा उठाकर स्वयं को ब्राण्ड के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

बाबरी मस्जिद विध्वंस के पश्चात् देश में हिन्दू और मुसलमानों के बीच के संघर्ष तथा मुस्लिम अल्पसंख्यकों पर होने वाले अत्याचार को लेखक ने महमूद के माध्यम से चित्रित किया है। एक दिन जब महमूद सब्जी लेकर बाजार से लौटता है तो रास्ते में कुछ लड़के चौराहे पर उसे रोकते हैं उनमें से'' एक लपककर उसकी सायकिल का हैंडिल खींच लेता है-रूक बे, कटुए।.....साले हिन्दुओं के मुहल्ले में क्या करने जा रहा है?''८

शिवमूर्ति का त्रिशूल उपन्यास साम्प्रदायिकता और जातिवाद को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। स्वयं लेखक के शब्दां में-''त्रिशूल न केवल मन्दिर-मण्डल की बल्कि आज के समाज में व्याप्त उथल-पुथल और टूटन की कहानी है। देशव्यापी उथल-पुथल को कथा बनाकर लेखक जातिवाद के विरूप और साम्प्रदायिकता की साजिश को बेबाकी और निर्मलता से बेनकाब करता है। ओछे हिन्दूवाद को ललकारता है। त्रिशुल उपन्यास को जाति युद्ध

Received: 18.08.2020 Accepted: 05.09.2020 Published: 06.09.2020

भड़काने और आग लगाने वाली रचना कहकर हिन्दू वादियों द्वारा इसकी निन्दा की गई है तथा इसे प्रतिबन्धित करने की भी मांग की गई है। उपन्यास के पात्र तथा उनके कार्य-व्यवहार पाठक को गहराई तक झकझोरते हैं। यह तो शास्त्री जी जैसी सोच वाले लोगों की मानसिकता का परिणाम था कि धर्म के नाम पर देश का विभाजन हुआ।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

१. शिवमूर्ति-त्रिशूल, राजकमल पेपर बैक्स, संस्करण २०१२, पृष्ठ-०७

२. वही, पृष्ठ-९-१०

३. वही, पृष्ठ-१८

४. वही, पृष्ठ-३८

५. वही, पृष्ठ-१०३

६. वही, द्वितीय फ्लैब से।

७. वही, पृष्ठ-२४

८. वही, पृष्ठ-३१

Received: 18.08.2020 Accepted: 05.09.2020 Published: 06.09.2020